श्री बावा भानूनाथ चालीसा

।। वंश महोत्रा के कुलदाता। जय बाबा भानूँ वरदाता।।
बाबा भानूनाय चालीसा

दीना नगर दरबार में, बावा तेरा स्थान। वंश महोत्रा के तुम्ही कुलदेव भगवान।
हाथ जोड़ वंदन कुरू, करु तुम्हारा गान। बावा अपने दास का, करो सदा कल्याण।

।। चोपाई ।।

सुनी बजुगों से है गाथा, हम कुलदेवा भानूँ नाथा ।।
माँ अम्बा लद्धामल बावा, ताको सुत भानूँ कहिलावा ।।
सुंदर आभा छटा निराली, दिव्य स्वरूप अनुपम लाली ।।
भानूँ सम भानूँ की शक्ति, पराबुद्धि विद्या बल भक्ति ।।
साल पांचवें पढ़ने पाया, उल्लटा पंडित जी को पढ़ाया ।।
दिव्य वाणी वेदों की बोले, बड़ो बड़ो के घट पट खोले ।।
देव समय का गया जो बढ़ता, भानूँ सम भानूँ गया चढ़ता।।
बारह वर्ष का हो गया बाला, चमक उठा भविष्य निराला।।
भगवद् पूजा अविरल भक्ति, लगा दिखाने अद्भुत शक्ति।।
वचन एक भी व्यर्थ न जावा, कहें लोग भानूँ को बावा ।।
जम्मु प्रांत की नगरी सांबा, पैंष्ठी गांव विप्रकुल धामा ।।
विप्र शिरोमणि ज्ञान का वेता, सकल समाज का भानूँ नेता।।
दूर दूर तक फैली ख्याति, दर्शन को आवे हर जाति।।
दए जज़िया न विप्र समाजा, पड़ा सोच ने प्रांत का राजा।।
पैंष्ठी गांव सिपाही आए, राजा का आदेश सुनाए।।
विप्र व्यवा बावा को सुनाई , भानूँ हुक्म दिया ठुकराई ।।
कला कलाधर जब दिखलाई , भाग उठे राजा के सिपाही।।
समाचार जब आन सुनाया, सुन राजा गुस्से ने आया।।
राम नगर संदेश पहुंचायो, भागू महोत्रा को बुलवायो ।।
भागू बात कही नीति की, राजा और प्रजा प्रीति की।।
चला भागू, भानूँ को मनाने, विप्रन को कर मुक्त कराने।।
भानूँ के घर पहुंचे सिपाही, मिली अम्बा, भानूँ की माई।।
खूंटी से लर्हिगा जो उतारा, अबला की इज्ज़त को वंगारा ।।
भानूँ लौट जभी घर आया , मां ने सब वृत्तान्त सुनाया।।
भानूँ कोप किया तब भारा, चला लेकर तेज कटारा।।
भागू महोत्रा के घर आया , भागू भानूँ को समझाया।।
भड़क रहा था क्रोध का लावा, ज्वाला में जल रहा था बावा।।
भानूँ खण्डा खुद को मारा, भुझा दीप कुल का उजियारा।।
भागू भय से हो गया आतुर, डूब गया चिंता के सागर।।
बरस रहा प्रकोप था भारा, दुखी हुआ परिवार था सारा।।
रो रो भागू अर्ज गुजारे, क्षमा करो अपराध हमारे।।
दया संत हृदय में आई , भीतर से यह दिया सुनाई।।
बने यहां अस्थान हमारा, पूजे वंश महोत्रा सारा।।

कार्तिक पुन्या पर्व मनावे, सभी महोत्रा यज्ञ रचावे।।
कच्चे धागे फूल चढ़ावें, खिचड़ी का मुझे भोग लगावें।।
जब जब घर में शादी भाखो, मेरे नाम की पत्तल राखो।।
कर शादी आवो मम डेरे, चार बार लो लावां फेरें।।
जब घर में फूले फुलवारी, सवा सेर गुड़ भेंट हमारी।।
मेरे वचन अटल कर जानो, हुक्म नाथ का सच कर मानो।।
कही 'मघुप' यह कथा पुनीता, पढ़ो सुनो गायो चालीसा।।

।। दोहा ।।

इस चालीसे पाठ को, बाबा का वरदान। कहे 'मघुप' जो पढ़े सुने, करे नाथ कल्याण।
बाबा के दरबार में, जो बोले जयकार मिले 'मघुप' सुख शांति, फले फूले परिवार।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) (महोत्रा महाजन) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36927/title/shree-bava-bhanunath-chalisa

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |